



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 51]
No. 51]

नई दिल्ली, बुधस्वतिवार, मार्च 23, 2000/चैत्र 3, 1922
NEW DELHI, THURSDAY, MARCH 23, 2000/CHAITRA 3, 1922

वाणिज्य मंत्रालय

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 23 मार्च, 2000

प्रारंभिक जांच-परिणाम

विषय :—कोरिया गणराज्य से इथिलीन प्रोपीलीन रबड़ (ई पी एम) और इथिलीन प्रोपीलीन डाईन रबड़ (ई पी डी एम)
के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांच

सं. 28/1/99-डीजीएडी :— सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (1975 में यथा संशोधित) तथा उसकी
सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण
तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 को ध्यान में रखते हुए;

क. कार्यपद्धति

1. जांच के लिए निम्नलिखित कार्य पद्धति अपनाई गई है:-

निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे इसके बाद प्राधिकारी कहा जाएगा) को उपरोक्त
नियमावली के अधीन घरेलू उद्योग की ओर से याचिकाकर्ता मै. हरडिलिया यूनीमर्स लि० (एच यू
एल), जिनका पंजीकृत कार्यालय 2/2, टी.टी.सी. इंडस्ट्रियल एरिया, डी-ब्लाक, एम आई डी सी, थाने

बेलापुर रोड, तरभी, नवी मुम्बई से लिखित आवेदन प्राप्त हुआ है जिसमें कोरिया गणराज्य (जिन्हें इसके बाद सम्बद्ध देश कहा जाएगा) मूल के अथवा वहां से निर्यातित इथिलीन प्रोपीलीन रबड़ (ई पी एम) और इथिलीन प्रोपीलीन डाईन रबड़ (ई पी डी एम) (जिन्हें इसके बाद संबद्ध वस्तु भी कहा जाएगा) के पाटन का आरोप लगाया गया है।

(ii) याचिकाकर्ता द्वारा दायर की गई याचिका की आरंभिक जांच से कतिपय त्रुटियों का पता लगा जिन्हें याचिकाकर्ता द्वारा बाद में ठीक कर दिया गया था। इसके बाद याचिका को सही दस्तावेज माना गया है।

(iii) याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत किए गए पर्याप्त साक्ष्यों के आधार पर प्राधिकारी ने कोरिया गणराज्य से संबद्ध वस्तु के आयातों की जाँच आरम्भ करने का निर्णय किया। प्राधिकारी ने उक्त नियम के उप-नियम 5(5) के अनुसार जाँच शुरू करने से पहले पाटन का आरोप प्राप्त होने की सूचना कोरिया गणराज्य के दूतावास को दी।

(iv) प्राधिकारी ने सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की अनुसूची-1 के सीमाशुल्क कोड 4002.70 और 4002.90 के अन्तर्गत वर्गीकृत, कोरिया गणराज्य के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांच आरंभ करते हुए तारीख 27 अगस्त, 1999 की एक सार्वजनिक सूचना भारत के राजपत्र, असाधारण, में प्रकाशित कराई।

(v) प्राधिकारी ने सार्वजनिक सूचना की एक प्रति सभी ज्ञात निर्यातकों (जिनके ब्यौरे याचिकाकर्ता द्वारा उपलब्ध कराए गए थे) और उद्योग संघों को भेजी, और उन्हें नियम 6 (2) के अनुसार अपने विचार लिखित रूप में देने का अवसर प्रदान किया।

(vi) प्राधिकारी ने भारत में संबद्ध वस्तुओं के सभी ज्ञात आयातकों (जिनका विवरण याचिकाकर्ता द्वारा उपलब्ध कराया गया था) को सार्वजनिक सूचना की एक प्रति भेजी और उनसे इस पत्र के जारी होने की तारीख से 40 दिनों के भीतर अपने विचार लिखित रूप से देने के लिए कहा।

(vii) केन्द्रीय उत्पाद शुल्क तथा सीमाशुल्क बोर्ड (सीबीईसी) से जांच अवधि सहित पिछले 3 वर्षों के दौरान भारत में संबद्ध वस्तुओं के आयातों का विवरण देने का अनुरोध किया गया था।

(viii) प्राधिकारी ने पूर्वोक्त नियम 6(3) के अनुसार याचिका की एक प्रति ज्ञात निर्यातकों और संबद्ध देशों के दूतावासों को भेजी। याचिका की एक प्रति अन्य हितबद्ध पार्टियों को भी अनुरोध करने पर उपलब्ध कराई गई।

(ix) प्राधिकारी ने सम्बद्ध सूचना प्राप्त करने के लिए नियम 6(4) के अनुसार निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों को प्रश्नावली भेजी:-

1. मै. कुम्हो पोलीकैम क.लि0, कोरिया गणराज्य
2. मै. कुम्हो पैट्रोकैमिकल्स कंपनी लि0, कोरिया गणराज्य
3. मै. हुडई पैट्रोकैमिकल्स कं., कोरिया गणराज्य

4. मै. कोरिया कुम्हो पेट्रोकेमिकल्स कं. लि०, कोरिया गणराज्य
5. मै. एक्सोन केमिकल इंटरनेशनल लि०, हांगकांग

अनेक पार्टियों ने सूचना प्रस्तुत करने के लिए समय बढ़ाने का अनुरोध किया और उचित कारण दर्शाए जाने पर प्राधिकारी द्वारा 20.10.99 तक इसकी अनुमति दी गई ।

(x) संबद्ध देश के नई दिल्ली स्थित दूतावास को भी नियम 6(2) के अनुसार जांच आरंभ किए जाने की सूचना दे दी गई थी और उनसे अनुरोध किया गया था कि वे अपने देश के निर्यातकों/उत्पादकों को निर्धारित समय के भीतर प्रश्नावली भरकर भेजने की सलाह दें । इस पत्र, याचिका और निर्यातकों को भेजी गई प्रश्नावली की प्रति ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों की सूची सहित संबद्ध देश के दूतावासों को भी भेजी गई थी ।

(xi) नियम 6(4) के अनुसार आवश्यक सूचना मंगाने के लिए संबद्ध वस्तुओं के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों/प्रयोक्ता संघों को भी एक प्रश्नावली भेजी गई थी:-

1. मै. ऋषिरूप होल्डिंग प्रा.लि., मुंबई
2. मै. आनन्द निशिकावा कं. लि०, नौएडा(यू.पी.)
3. मै. ए एस पी सीलिंग प्रोडक्ट लि०, नई दिल्ली
4. मै. बी टी आर वाडको आटोमोटिव लि०, गाजियाबाद
5. मै. गोल्डसील इंजी.प्रोडक्ट, लि०, मंबई
6. मै. बिरला टायर्स, कलकत्ता
7. मै. नेशनल इंजी. इंडस्ट्रीज लि०, कलकत्ता
8. मै. आल इंडिया रबड़ इंडस्ट्रीयल एसोसिएशन(एरिया)
9. आटोमोटिव कम्पोनेंट मेन्यूफैक्चरर्स एसोसिएशन आफ इंडिया (एक्मा)
10. आटोमोटिव टायर मेन्यूफैक्चरर्स एसोसिएशन (एटमा)

अनेक पार्टियों ने सूचना प्रस्तुत करने के लिए समय बढ़ाने का अनुरोध किया और उचित कारण दर्शाए जाने पर प्राधिकारी द्वारा 20.10.99 तक इसकी अनुमति दी गई ।

निम्नलिखित निर्यातकों/उत्पादकों द्वारा प्रश्नावली/अधिसूचना के उत्तर प्रस्तुत किए गए:-

1. मै. कुम्हो पोलीकैम कं. लि०, (के पी सी)
2. एसोसिएटेड लॉ एडवाइजर्स के जरिए मै. एक्सोन केमिकल इंटरनेशनल सर्विसेज लि०, हांगकांग (ई सी आई एस)

निम्नलिखित आयातकों/प्रयोक्ता संघों द्वारा प्रश्नावली/अधिसूचना के उत्तर प्रस्तुत किए गए ।

1. मै. जे० के. इंडस्ट्रीज लि०
2. मै. आटोमोटिव टायर मेन्यूफैक्चरर्स एसोसिएशन(एटमा)
3. मै. विक्रान्त टायर्स लि०

4. मै0 सिएट लि0
5. मै. एम आर एफ लि0
6. मै. ए एस पी सीलींग प्राइवेट लि0
7. आल इंडिया रबड़ इंडस्ट्रीज एसोसिएशन
8. मै. ऋषिरूप होल्लिंग प्राइवेट लि0, मुंबई

(xii) क्षति तथा विचाराधीन उत्पाद के बारे में याचिकाकर्ता से अतिरिक्त सूचना मांगी गई थी जो उन्होंने दे दी थी। क्षति और उत्पादन लागत के बारे में सूचना याचिकाकर्ता द्वारा उपलब्ध करा दी गई थी।

(xiii) प्राधिकारी ने आवश्यक समझी गई सीमा तक याचिकाकर्ता के परिसरों की मौके पर जांच की।

(xiv) प्राधिकारी ने, अपने पास सार्वजनिक फाइल के रूप में रखे गए, विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा दिए गए साक्ष्यों के अगोपनीय अंश उपलब्ध रखे और उसे हितबद्ध पार्टियों द्वारा देखने के लिए खुला रखा।

(xv) सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांतों (जीएएपी) तथा याचिकाकर्ता द्वारा दी गई सूचना के आधार पर भारत में विषयगत माल की इष्टतम उत्पादन लागत तथा माल को बनाने और बेचने की न्यूनतम लागत का हिसाब लगाने के लिए लागत जांच भी की गई।

(xvi) **** यह चिह्न इस अधिसूचना में एक हितबद्ध पार्टी द्वारा गोपनीय आधार पर दी गई सूचना तथा नियमों के अंतर्गत प्राधिकारी द्वारा उसे ऐसा ही माने जाने का द्योतक है;

(xvii) पाटनरोधी निदेशालय के अधिकारियों के एक दल ने जनवरी, 2000 में मै. केपीसी के परिसरों का दौरा किया और सामान्य मूल्य, तथा निर्यात कीमत के दावों एवं दावा किए गए समायोजनों का सत्यापन किया।

(xviii) जांच 1 अप्रैल, 1998 से 30.6.1999 तक की अवधि अर्थात् जांच अवधि (पी ओ आई) के लिए की गई थी।

(ख) निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पार्टियों के विचार

1. याचिकाकर्ता के विचार

(क) विचाराधीन उत्पाद

(i) ई पी एम/ईपीडीएम कृत्रिम रबड़ अनेक ग्रेडों/प्रकारों/रूपों में उत्पादित की जा सकती है। ई पी डी एम आमतौर पर गट्ठे के रूप में उत्पादित किया जाता है और प्रति गट्ठा 20-25 किग्रा0 का

होता है। ई पी एम/ई पी डी एम की तकनीकी विशिष्टियाँ मुख्यतः ईथीलिन, प्रोपीलीन, डाइन कांटेंट मूनी विसकोसिटी द्वारा शासित होती हैं जिसकी विभिन्न किस्मों से भिन्न भिन्न प्रकार के ग्रेडों का उत्पादन किया जा सकता है।

(ii) यद्यपि ई पी एम/ई पी डी एम के विनिर्माण के लिए विशेष प्रौद्योगिकी की आवश्यकता होती है लेकिन विभिन्न ग्रेडों का उत्पादन करने के लिए मोनोमर (कच्चा माल), तकनीकी कुशलता, विनिर्माण प्रक्रिया/पद्धति मुख्यतः वही रहती है और विभिन्न ग्रेडों के लिए किन्हीं विशेष उपकरणों की आवश्यकता नहीं होती है। विभिन्न ग्रेडों के लिए उत्पादन का विपणन और संवितरण भी वही रहता है।

(iii) विभिन्न आपूर्तिकर्ताओं द्वारा उत्पादित ई पी एम/ई पी डी एम का उपयोग परस्पर एक दूसरे के लिए किया जा सकता है।

(iv) ई पी एम/ई पी डी एम के लिए कोई प्रतिस्थापन उपलब्ध नहीं है।

(v) घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित उत्पाद और कोरिया से निर्यातित ई पी एम/ई पी डी एम में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

(vi) ई पी एम/ई पी डी एम का उत्पादन घोल बहुलक प्रौद्योगिकी का उपयोग करके किया जाता है। विश्वभर में विभिन्न उत्पादकों द्वारा अपनाई जा रही उत्पादन प्रक्रिया में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है, यद्यपि अन्य विनिर्माता अपनी उत्पादन प्रक्रिया उपलब्ध सुविधाओं और आवश्यकताओं के अनुसार सुधार कर लेते हैं।

(vii) कोरिया गणराज्य के निर्यातक बाजार में ई पी एम/ई पी डी एम की बड़े पैमाने पर डम्पिंग कर रहे हैं।

(ख) पाटन के बारे में

i) कोरिया गणराज्य में ई पी एम/ई पी डी एम की प्रचलित कीमतों के विश्वसनीय आंकड़े प्राप्त नहीं हो सके और इसलिए कोरिया गणराज्य में सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए प्रमुख कच्चे माल, पैकिंग सामग्री और उपयोगी वस्तुओं के लिए मानक उपभोग मानदंडों के आधार पर परिकल्पित उत्पादन लागत पर विचार किया गया है।

(ii) कीमत संबंधी उस सूचना पर भी विचार किया गया है, जिस कीमत पर संबद्ध वस्तुओं का कोरिया गणराज्य से निर्यात अथवा कोरियाई बाजार में आयात किया गया, क्योंकि कोरियाई बाजार में जिस कीमत पर वस्तुएं उत्पादकों द्वारा बेची जानी चाहिए, उसका संबंध ऐसी वस्तुओं की आयात कीमत से है।

iii) ई पी एम/ई पी डी एम समर्पित सीमाशुल्क उप-शीर्ष के तहत वर्गीकृत है। इसलिए यह माना जा सकता है कि डी जी सी आई एस आंकड़े ई पी एम/ई पी डी एम की आयात मात्रा और मूल्य की सही तस्वीर प्रतिबिम्बित करते हैं। चूंकि डी जी सी आई एस ने वर्ष 98-99 के लिए आंकड़े जारी नहीं किए हैं, इसलिए चालू वर्ष में निर्यात कीमत का दावा गौण स्रोत अर्थात् (पी पी आर) के प्रकाशित आंकड़ों के आधार पर किया गया है।

(ग) क्षति के बारे में

- i) कोरिया गणराज्य से आयात समग्र रूप से बढ़े हैं। संबद्ध देश से कुल मांग में आयातों का बाजार हिस्सा जो 1997 में केवल 4.5 प्रतिशत था, 98-99 में बढ़कर 9.81 प्रतिशत हो गया।
- ii) उत्पादन और क्षमता उपयोग में महत्वपूर्ण गिरावट आई है। घरेलू उद्योग, प्रारंभ में जापानी और अब कोरियाई विनिर्माताओं द्वारा वस्तुओं की डम्पिंग की वजह से पूरी क्षमता का उपयोग नहीं कर सका।
- iii) घरेलू उद्योग की बिक्री जो 1996-97 में 3074 मी.टन थी, जापान और कोरिया द्वारा किए जा रहे पाटन के कारण 97-98 और 98-99 में लगभग स्थिर रही है।
- iv) याचिकाकर्ता का स्टॉक 1.4.98 के 134 मी.टन से बढ़कर 31.12.98 तक 206 मी.टन हो गया।
- v) याचिकाकर्ता अपने प्रमुख ग्राहकों जैसे मैसर्स विक्रांत टायर्स, मै. मैसूर पोलिमर्स और मै. फैलकोन टायर्स को जो बिक्री करता था, वह बंद हो गई।
- vi) यद्यपि याचिकाकर्ता की कंपनी के रोजगार स्तर में कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं हुआ है क्योंकि उनकी नीति लोगों का रोजगार कायम रखने की है, तथापि नए लोगों की नियुक्ति पर सभी क्षेत्रों में लगभग रोक लगी है।

- vii) याचिकाकर्ता पाटित आयातों के भारी दबाव के कारण न तो ईष्टतम मात्रा में बिक्री कर सका है और न ही उचित बिक्री वसूली प्राप्त कर सका है ।

घ) कारणात्मक संबंध

- i) अन्य देशों के निर्यातक ई पी एम/ई पी डी एम का निर्यात भारतीय बाजार में उचित कीमत पर कर रहे हैं और इसलिए घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हो रही है ।
- ii) भारत में ई पी एम/ई पी डी एम की मांग में अधिक अंतर नहीं आया है और इसलिए इसके कारण घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हुई है ।
- iii) घरेलू उद्योग को आयातों के पहुंच मूल्य से बराबरी करने के लिए अपनी उत्पादन लागत से बहुत कम कीमतों पर बिक्री करने के लिए बाध्य होना पड़ा जिसके कारण उसे भारी वित्तीय हानि हो रही है ।

2. निर्यातक के विचार

क) विचाराधीन उत्पाद और समान उत्पाद

1. मै. के पी सी ने निम्नलिखित विचार व्यक्त किए हैं-

- i) ई पी एम/ई पी डी एम के सभी ग्रेड एक दूसरे का स्थान नहीं ले सकते और किसी एक ग्रेड का इस्तेमाल किसी दूसरे उपयोग में नहीं किया जा सकता है ।
- (ii) मैसर्स के पी सी के पास ई पी एम/ई पी डी एम के अनेक प्रकार हैं जैसे बेल, फ्राएबल, क्रम्ब और पैलेट और विभिन्न ग्रेड/प्रकारों के लिए विशेष उपकरणों की जरूरत पड़ सकती है ।

iii) मै0 के पी सी, केईपीब्रांड के ईपीएम/ईपीडीएम का विनिर्माता शिपर और निर्यातक है। मै0 ऋषिरुप भारतीय बाजार हेतु के ई पी ब्रांड का प्रतिनिधि एजेंट है।

iv) मै0 ईसीआईएस, विस्टालोन ब्रांड के ईपीएम/ईपीडीएम का विक्रेता है।

2. मै0ई सी आई एस ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं :-

i) मै0ईसीआईएस, कोरिया गणराज्य में विनिर्माण नहीं करता है और नही वह कोरिया गण0 में बिक्री करता है और इसलिए हमारे पास कोरियायी घरेलू कीमतों की कोई जानकारी नष्ट है उनका कोई आधार नहीं है।

ii) एशिया प्रशांत क्षेत्र में मै0 ईसीआईएस की बिक्री के बारे में तीसरे देशों के आधार पर आकलित किए गए सामान्य मूल्य से यह पता चलता है कि मै0ई सी आई एस के भारतीय ग्राहक सामान्य तौर पर एशिया प्रशांत क्षेत्र में इसके अन्य ग्राहकों से कम भुगतान नहीं करते हैं।

iii) जांच अवधि के दौरान कोई पाटन नहीं हुआ है क्योंकि सामान्यतः मै0ईसीआईएस के उत्पाद उन वस्तुओं के समान उत्पाद नहीं है जो कि याचिकाकर्ता के विषय हैं।

iv) मै0 एच यू एल का ईपीएम/ईपीडीएम सामान्यतः समान वस्तु नहीं है और न ही वह मै0ईसीआईएस द्वारा बेची गई वस्तु के समान है और इसके परिणामस्वरूप मै0 ईसीआईएस द्वारा बेचा गया अधिकांश ईपीएम/ईपीडीएम को इस जांच के दायरे से बाहर रहना चाहिए।

v) मै0 एच यू एल, डीसीपीडी और ईएनबी दोनों पर आधारित ईपीडीएम का उत्पादन करता है जबकि मै0ईसीआईएस तथा अन्य एशियाई प्रशान्त देशों द्वारा भारत में बेचा गया ईपीएम/ईपीडीएम उत्पाद ईएनबी आधारित ईपीडीएम है।

vi) डीसीपीडी आधारित ईपीडीएम और ईएनबी आधारित ईपीडीएम कार्यनिष्पाद में पूर्णतया: भिन्न हैं।

vii) जांच अवधि के दौरान मै0 ई सी आई एस द्वारा ईपीएम/ईपीडीएम के चार ग्रेडों अर्थात् 2200 के, 2200, 2504 तथा 5730 विस्टालोन रेंज की बिक्री की गयी है। केवल विस्टालोन 2504 तथा विस्टालोन 5730 मै0 एच यू एल के ई एन बी आधारित ग्रेडों के साथ कुछ समानताएं रखते हैं। तथापि, मै0 ईसीआईएस के विस्टालोन 2200 के और 2000 ग्रेड मै0 एच यू एल के उत्पादों से भिन्न हैं।

viii) हालांकि, मै0 एच यू एल और मै0 के पी सी की विनिर्माण प्रक्रिया विलयन पर आधारित है फिर भी विस्तृत प्रक्रिया डिजाइन में भिन्नता से उत्पाद क्षमता एवं संयंत्र संचालन की लागत क्षमता पर अत्यधिक प्रभाव पड़ सकता है।

ix) ईपीएम/ईपीडीएम की कीमतें ईपीडीएम टरपोलिमर में डाइंस तत्व के प्रकार और उसकी मात्रा के आधार पर अत्यधिक भिन्न हो सकती हैं।

x) डाइन प्रयुक्त ईपीडीएम पर ध्यान न देते हुए सभी प्रकार के रबड़ को आईटीसी के 4002.70 तथा ईपीएम को 4002.99 के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

xi) विस्टालोन 2000 और विस्टालोन 2000 के मुख्यतः समान हैं, अंतर केवल यह है कि 2000 के की अलग उत्पादन प्रक्रिया है।

ख) पाटन के बारे में

मै0 ईसीआईएस कोरिया गणराज्य में ईपीडीएम अथवा ईपीएम का विनिर्माण नहीं करता है और न ही यह उत्पादों को कोरिया गणराज्य में बेचता है। इसलिए, निर्दिष्ट प्राधिकारी के लिए कोरियाई घरेलू बाजार में हुई वास्तविक बिक्री के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण करना संभव नहीं होगा। भारतीय सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम की धारा 9क(1) (ग) (i)(ख) के अनुसार आंकलित सामान्य मूल्य का निर्धारण करना संभव नहीं है क्योंकि ईसीआईएस कोरिया गणराज्य में विनिर्माण नहीं करता है। जिन कीमतों पर मै0 केपीसी द्वारा मै0 ईसीआईएस को बिक्री की जाती है, वह एक बाजार अभियान है। मौजूदा शुल्कों के कारण भारत में उत्पादित और भारतीय ग्राहकों को बेचा गया ईपीएम/ईपीडीएम आयातित उत्पाद से काफी सस्ता होना चाहिए।

ग) क्षति के संबंध में

मै0 ईसीआईएस ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं :-

- i) याचिकाकर्ता को ऐसी कोई क्षति नहीं हुई है जिसे हमारे द्वारा पंहुचायी गयी क्षति के रूप में दर्शाया जा सके। वस्तुतः इसकी आर्थिक कठिनाइयां इसके भिन्न-भिन्न उत्पादों की निष्पादन संबंधी सीमाओं और बड़े पैमाने पर किफायतों की कमी के कारण उत्पन्न हुई प्रतीत होती हैं।

घ) अन्य तर्क

मै0 केपीसी ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं :-

- i) हमें इस बात का कोई अनुमान नहीं है कि क्या विस्टालोन की निर्यात बिक्री का भारत में आयात किया गया है अथवा नहीं और न ही हमें बिक्री कीमत, उपयोक्ता के नाम, गंतव्यों इत्यादि जैसे निर्यात संबंधी किसी ब्यौरे की जानकारी है।

ii) हम ईसीआईएस के अनुरोध पर विस्टालोन का उत्पादन और इसका पोतलदान कर रहे हैं जबकि ईसीआईएस भारत सहित विदेशी बाजारों की विस्टालोनास के निर्यात से संबंधित समस्त क्रियाकलापों का निष्पादन कर रहा है।

3. आयातकों के विचार

क) विचाराधीन उत्पाद तथा समान वस्तु के बारे में

i) मै0 केपीसी अपने ब्रांड नाम केईपी के अंतर्गत कई प्रकार के ईपीएम/ईपीडीएम का उत्पादन करता है तथा अपने अनन्य एजेंटों के माध्यम से भारत को इसका निर्यात करता है।

ii) जांच हेतु वस्तु की पहचान नहीं की गयी है। ईपीएम/ईपीडीएम व्यापक एवं विशिष्ट श्रेणी मूलक शब्द हैं जो उत्पादों अथवा वस्तुओं की दो अलग-अलग वर्ग समूहों का प्रतिनिधित्व करते हैं। ईपीएम तथ सिंथेटिक रबड़ की किस्म का उत्पादन एथीलीन और प्रोपीलीन की बहुलकीकरण की प्रक्रिया द्वारा किया जाता है तथा यह सीमाशुल्क उपशीर्ष सं0 4002.70 के अंतर्गत वर्गीकृत है जबकि ईपीडीएम का उत्पादन 3 मोनोमर्स के बहुलकीकरण द्वारा किया जाता है तथा यह 4002.99 के अंतर्गत वर्गीकृत है।

iii) यह जांच कानून की दृष्टि से अनुचित है क्योंकि दो अलग-अलग शीर्षों के अंतर्गत आने वाले दो अलग-अलग वर्ग के पोलिमरों को एक ही जांच में शामिल किया गया है।

iv) ईपीएम ग्रेड तथा ईपीडीएम ग्रेड न तो समान वस्तुएं हैं और न ही इनका अदल-बदल कर इस्तेमाल किया जा सकता है।

v) याचिकाकर्ता द्वारा यह प्रदर्शित करने के लिए कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया गया है कि न तो एथीलीन एवं प्रोपीलीन के सभी प्रकार के सह-बहुलकों का अदल-बदल कर इस्तेमाल किया जा सकता है और उनके बीच उनका अंतिम उपयोग होता है और न ही यह कि वे मै0 केपीसी के एथीलीन एवं प्रोपीलीन के किसी अथवा सभी प्रकार के सह-बहुलकों तथा ईएनवी उत्पादों के साथ अदल-बदल कर इस्तेमाल किए जाने के योग्य हैं।

vi) जापान के विरुद्ध पाटनरोधी कार्रवाइयों की इसी प्रकार की जांच में पहले की गई गलत व्याख्या को इस जांच का आधार नहीं बनाना जाना चाहिए।

(vii) याचिकाकर्ता ने केवल गाँठ के स्वरूप में आयातित ईपीएम/ईपीडीएम ग्रेडों/किस्मों के आयात के विरुद्ध शिकायत दायर की है। दूसरी ओर, मै0 केपीसी, ईपीएम/ईपीडीएम का विभिन्न भौतिक स्वरूपों में उत्पादन करता है जैसे कि फ्राइएबल, पेलेट्स, क्रम्ब्स तथा गाँठों के स्वरूप में तथा इस प्रकार की सभी सामग्री अलग-अलग होती है एवं उसे अलग से वर्गीकृत किया जाता है। कुछेक अनुप्रयोगों में, अंतिम उपयोक्ता पेलेट्स के स्वरूप का आयात करना पसंद कर सकता है तथा वह गाँठ के स्वरूप जैसे किसी अन्य स्वरूप का इस्तेमाल नहीं कर सकता है। प्राधिकारी ने ईपीएम/ईपीडीएम के विभिन्न प्रकारों/ग्रेडों की तकनीकी कठिनाइयों को न पहचानने में गलती की है तथा उसने इन उत्पादों के सभी भौतिक स्वरूप के बारे में गलत तरीके से यह जांच शुरू कर दी है।

viii) याचिकाकर्ता द्वारा प्राधिकारी के समक्ष यह प्रदर्शित करने के लिए जांच परिणामों जैसा कोई तकनीकी साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया है कि उनके सभी उत्पाद एच यू एल द्वारा निर्मित किसी अथवा सभी उत्पादों के बराबर हैं।

ix) कुछेक अनुप्रयोगों में, ईपीडीएम के स्थान पर बुटाइल रबड़ का इस्तेमाल तब किया गया है जब बुटाइल रबड़ की कीमतें अत्यधिक गिर गई थी। अतः प्राधिकारी को यह मानना होगा कि ईपीडीएम की मांग परिवर्तनशील है और यह कि अन्य बहुलक अंतिम उपयोगों में उनके इस्तेमाल के लिए ईपीएम/ईपीडीएम के साथ प्रतिस्पर्धा करते हैं और ऐसे सभी बहुलक ईपीएम/ईपीडीएम के स्थान पर प्रयोग में लाए जा सकते हैं।

x) यह अनुरोध किया जाता है कि प्राधिकारी द्वारा मै0 के ईपी और मै0 विस्टालोन ग्रेडों के लिए अलग से निष्कर्ष निकाले जाएं।

ख. पाटन के संबंध में

i) याचिकाकर्ता द्वारा कोरिया में उत्पाद की बिक्री हेतु सामान्य मूल्य के बारे में कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया गया है।

ii) आकलित सामान्य मूल्य के विकल्प अथवा तीसरे देशों को हुए निर्यातों से संबंधित आंकड़ों का सहारा उन असंगठित बाजारों और देशों के बारे में की जाने वाली प्रक्रियाओं में लिया जाता है जो डब्ल्यू टी ओ के सदस्य नहीं हैं।

iii) जांच अवधि के दौरान मै0 के पी सी द्वारा कीमत में गिरावट अथवा कमी किए जाने का कोई साक्ष्य नहीं है।

ग. क्षति के बारे में

i) 1996-97 से 98-99 तक के दौरान मै0 केपीसी का बाजार हिस्सा नगण्य और न्यूनतम स्तर से कम था ।

ii) याचिकाकर्ताओं का बाजार हिस्सा 96-97 में 55.75 % से बढ़कर 98-99 में 67.86 % तक हो गया यद्यपि जांच अवधि के दौरान बाजार सीमित हो गए थे ।

iii) वस्तु सूची के स्तर में 134 मी0 टन से 206मी0 टन तक की बढ़ोतरी खतरनाक तथा उच्च नहीं है । यह बढ़ोतरी केवल 17.6 दिन की वस्तु सूची के स्तर तक ही होगी। इसके अतिरिक्त यह कहना भी संभव नहीं है कि क्या वास्तविक माल सूची अच्छी सामग्री की है अथवा पुराने माल और पुराने विनिर्देशनों की है । यह अनुरोध किया जाता है कि वस्तुसूची के स्तर के पुराने स्टॉक का पता लगाने के लिए मै0 एच यू एल की वस्तुसूची की अवधि के बारे में विश्लेषण किया जाना चाहिए ।

iv) याचिकाकर्ताओं ने पिछली अवधि की तुलना में जांच अवधि के दौरान अपने घाटे को कम किया है तथा यह कि मै0 के पी सी से मै0 केईपी ग्रेडों के थोड़े से आयात से उन्हें कोई क्षति नहीं हुई और न ही पहुंचायी जा सकती है । घाटे के कारण रहे हैं :- कम मांग, उत्पादन क्षमता का कम उपयोग, लागत कीमत से कम कीमत पर अपने उत्पादों का निर्यात, खराब कच्ची सामग्री तथा उपयोगिता खपत मानदंड ।

v) याचिकाकर्ता एक बीआईएफआर कंपनी है । कंपनी की समूची निवल संपत्ति नकारात्मक है तथा याचिकाकर्ता को हुई सभी वित्तीय कठिनाइयां जांच अवधि से पहले प्रारंभ हुई हैं ता जांच अवधि के दौरान ईपीडीएम के केईपी ग्रेडों के थोड़े से आयात से क्षति का कोई कारण नहीं बन सकता है ।

vi) याचिकाकर्ताओं को पिछली अवधि में उनके सामने आई वित्तीय समस्याओं के कारण जांच अवधि में ब्याज के लिए काफी अधिक धनराशि का भुगतान करना पड़ा है ।

घ) कारणात्मक संबंध के बारे में

i) आटोमोबाईल उद्योग में अत्यधिक मंदी के कारण 96-97 से लेकर भारत में ईपीएम/ईपीडीएम की मांग में उत्तरोत्तर कमी आयी थी । कुलमिलाकर बाजारगत क्षमता 96-97 में 5514 मी0 टन से घटकर 98-99 में 4824.8 मी0 टन हो गयी, जिससे 96-97 से मांग में लगभग 12.5 % की गिरावट प्रदर्शित होती है ।

ii) मै0 केपीसी अथवा कोरिया से आयातों के कारण मै0 एचयूएल को हुई क्षति के बारे में कोई कारणात्मक संबंध स्थापित नहीं हो सकता है। ऐसे कई अन्य कारक हैं जो याचिकाकर्ता को क्षति पहुंचा रहे हैं तथा पाटनरोधी नियमों के अनुबंध- II के अनुसार, कथित पाटन आयात से भिन्न ऐसे अज्ञात कारणों की प्राधिकारी द्वारा जांच किया जाना आवश्यक है जो कि घरेलू उद्योग को उसी समय क्षति पहुंचा रहे हैं।

iii) 10,000 टन ईपीएम/ईपीडीएम का उत्पादन सिंथेटिक रबर की इस किस्म के लिए व्यवहार्य उत्पादन क्षमता नहीं है। इसके परिणामस्वरूप उनकी उत्पादन लागत उच्च है और वे क्षति उठा रहे हैं। पिछले तीन वर्षों के दौरान भारत में मांग में कोई वृद्धि नहीं हुई है बल्कि आटोमोटिव क्षेत्र में व्याप्त मंदी, उच्च प्रौद्योगिकी अनुपयोग में और अधिक कमी आई है जिससे याचिकाकर्ता की क्षति हुई है।

ड.) अन्य तर्क

i) मै0 केपीसी को न तो भारतीय बाजार के संबंध में मै0 ईसीआईएस, हांगकांग को उनके द्वारा बेचे गए विस्टालोन ब्रांड की अंतिम बिक्री मात्रा और न ही अंतिम बिक्री कीमत के बारे में कोई जानकारी है। ईपीएम/ईपीडीएम के विस्टालोन ग्रेडों को कोरिया से हुए निर्यात की मात्रा के रूप में नहीं समझा जाना चाहिए तथा इस मात्रा को अमरीका अथवा हांगकांग, जिसे भी उचित समझा जाए, से हुए निर्यात के रूप में समझा जाना चाहिए क्योंकि विस्टालोन मै0 केपीसी का उत्पाद नहीं है।

ii) प्राधिकारी से एक श्वेत पत्र प्रकाशित करने तथा उसके द्वारा इस जांच में उचित बिक्री कीमत निकालने में अपनाए गए सामान्य सिद्धांतों पर चर्चा करने का अनुरोध किया जाता है।

iii) कोरियाई कुम्हो पेट्रोकेमिकल्स कं0 लि0 तथा मै0 कुम्हों एंड कं0 द्वारा कोई निर्यात नहीं किया गया है। के पीसी ने हमेशा ही भारत को तथा अपने ग्राहकों को अपना उत्पाद सीधे ही निर्यात किया है। इसके अतिरिक्त, मै0 विक्रान्त टायर अथवा मै0 मैसूर पोलीमर्स को कोई सामग्री नहीं बेची गयी है जैसाकि याचिकाकर्ताओं द्वारा आरोप लगाया गया है।

(IV) जांच अवधि के दौरान मै0 के पी सी ने डी ई ई सी लाइसेंसों के तहत भारत में दो ग्राहकों को केवल अपने के ई पी ग्रेडों की बिक्री की है।

(V) जांच अवधि के दौरान भारत को किए गए निर्यात कीमत में कोई गिरावट नहीं हुई है। जांच अवधि के दौरान सामग्री का निर्यात 1667 अमरीकी डालर प्रति मी0 टन के सी आई एफ मूल्य पर किया गया था। यह कीमत उस कीमत से अधिक है जिसपर पूर्ववर्ती अवधि के दौरान भारत को निर्यात किया गया था।

याचिकाकर्ता द्वारा भेजे गए आंकड़ों से पता चलता है कि गत तीन वर्षों के दौरान कोरिया से ईपीएम/ईपीडीएम के आयात मूल्य में कोई गिरावट नहीं हुई है और कोरिया से मूल्य गिरावट या कटौती का कोई प्रमाण नहीं है।

(VI) मै0 सिएट, मै0 एम आर एफ, मै0 विक्रान्त टायर्स लि0 और मै0 जे के इंडस्ट्रीज ने जांच अवधि के दौरान आयात और घरेलू उद्योग से खरीद संबंधी सूचना मुहैया कराई है।

(ग) प्राधिकारी द्वारा जांच

निर्यातकों, आयातकों, याचिकाकर्ताओं और अन्य हितबद्ध पार्टियों द्वारा किए गए उपर्युक्त अनुरोधों की जांच उस स्तर तक की गई है जिस स्तर तक नियमानुसार ये इस मामले से संबद्ध हैं और इस मामले को जिस स्तर तक ये प्रभावित करते हैं और उन पर विचार किया गया है तथा इन निष्कर्षों में उपर्युक्त जगहों पर उन पर कार्रवाई की गई है।

(ग) विचाराधीन उत्पाद

मौजूदा जांच में विचाराधीन उत्पाद सभी रूपों/ग्रेडों/शुद्धता वाली ईपीएम और ईपीडीएम रबड़ है। ई पी डी एम रबड़ सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की अनुसूची 1 के सीमाशुल्क उप शीर्ष 4002.70 के अधीन वर्गीकृत हैं। इसके अलावा ईपीडीएम को सुमेलित अंतर्राष्ट्रीय व्यापार वर्गीकरण प्रणाली के अंतर्गत उपशीर्ष सं0 4002.70.09 के तहत वर्गीकृत किया गया है और यह आई टी सी उप शीर्ष सं0 4002.70.01 के अधीन वर्गीकृत पोलिब्यूटाडीन से भिन्न है। ईपीएम 4002.99 के अधीन वर्गीकृत है।

यह तर्क दिया गया है कि याचिकाकर्ता ने केवल गाँठ स्वरूप का उल्लेख करते हुए याचिका दायर की है जबकि मै. केपीसी ने सभी स्वरूपों के ईपीडीएम/ईपीएम का उत्पादन किया है। प्राधिकारी ने जाँच शुरू करने से संबंधित दिनांक 27.8.99 की अधिसूचना में सीमाशुल्क शीर्ष 4002.70 और 4002.99 के अन्तर्गत वर्गीकृत क्रमशः ईपीडीएम और ईपीएम के बारे में जाँच शुरू की है, जिसमें इन शीर्षों के अन्तर्गत आने वाले सभी स्वरूपों को शामिल किया गया है।

ईपीएम इथिलीन एवं एकलरूपीय प्रोपीलीन का एक सह-बहुलक है और इसका उत्पादन विलयन के बहुलकीकरण द्वारा किया जाता है।

ईपीडीएम भी इथिलीन, प्रोपीलीन और डाईन का एक संश्लिष्ट टेस-पोलिमर है। इसका उत्पादन विलयन की बहुलकीकरण तकनीक से किया जाता है। ईपीडीएम में ओजोन

और तापीय प्रतिरोध बहुत अधिक मिलता है और इसका उपयोग मुख्य रूप से स्वचालन प्रयोगों में किया जाता है जैसे प्रोफाइल्स, रेडिएटर्स, हौज तथा सीलों आदि में भवन और भवन निर्माण में जैसे प्रोफाइल्स, छदन पन्नियों और सीलों में केबल और तारों में जैसे केबलइन्सुलेसन एउ जैकेटिंग के रूप में और इसका उपयोग व्यापक रूप से होता है खासकर ढलुआ वस्तुओं में ।

ईपीएम और ईपीडीएम का उपयोग अलग अलग वर्ग के पोलिमेर होने के कारण अलग-अलग प्रकार से होता है और ये आपस में परिवर्तनीय नहीं हैं और इसलिए मौजूदा जांच के प्रयोजन से प्राधिकारी आई टी सी शीर्ष 4002.70.09 के अधीन वर्गीकृत ईपीडीएम और शीर्ष 4002.99 के अधीन वर्गीकृत ईपीएम को विचाराधीन उत्पाद मानते हैं ।

तथापि, उपर्युक्त वर्णित विनिर्माण प्रक्रिया, कार्य और उपयोग तथा सीमाशुल्क वर्गीकरण केवल निर्देशात्मक है और यह मौजूदा जांच के क्षेत्र में किसी तरह से बाध्यकारी नहीं है ।

2. समान वस्तु

घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित ईपीडीएम रबड़ कोरिया गणराज्य से निर्यातित ईपीडीएम के समान वस्तु हैं या नहीं इसकी जांच करने के लिए इनके गुणों जैसे कि भौतिक गुण (आकार, रासायनिक संयोजन, कच्ची सामग्री), विनिर्माण प्रक्रिया एवं औद्योगिकी, कार्य और उपयोगों, उत्पाद विशिष्टताओं, कीमत निर्धारण, वितरण एवं विपणन और वस्तुओं के टैरिफ वर्गीकरण पर विचार किया गया है ।

दूसरी हितबद्ध पार्टियों द्वारा यह कहा गया है कि ईपीएम और ईपीडीएम ग्रेड न तो समान वस्तु है और न ही परस्पर परिवर्तनीय और न ही स्थनापन्न हैं । यह भी कि इन ग्रेडों के भौतिक रूप भी भिन्न हैं । इसके अलावा प्राधिकारी नोट करते हैं कि ईपीडीएम के ग्रेडों और उनके रूपों में अंतर का उल्लेख औद्योगिकी और अंत्य प्रयोग के संदर्भ में किया गया है यह तर्क दिया गया है कि मै. ईसीआईएस द्वारा निर्यातित चार ग्रेडों में से केवल दो ग्रेड अर्थात् विस्टालोन 2504 और 5730 ही मै. एचयूएल के ईएनबी आधारित ग्रेडों के समान है । इसके अलावा निर्यातक और याचिकाकर्ता के ग्रेडों की प्रक्रियागत डिजायन में अन्तर हैं तथा डीन और टरपोलीमर तत्व के अनुसार ई.पी.एम./ ई.पी.डी.एम. ग्रेडों की कीमतों में भी अन्तर है ।

प्राधिकारी ने माना है कि यह याचिकाकर्ता द्वारा उत्पादित ईपीडीएम के विभिन्न ग्रेडों और संबद्ध देश से आयातित माल के संदर्भ में समान वस्तु के मुद्दे की जांच के समय मददगार होगा । प्राधिकारी का मानना है कि कोरिया गणराज्य का ईपीडीएम और याचिकाकर्ता द्वारा उत्पादित वस्तु गुणों में एक दूसरे से काफी समान हैं और तकनीकी एवं वाणिज्यिक रूप से स्थनापन्न योग्य हैं । घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित ईपीडीएम और कोरिया गणराज्य से निर्यातित ईपीडीएम नियम 2 (घ) की परिभाषा के तहत एक समान वस्तु हैं । जहां तक ईपीएम का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि ये विभिन्न श्रेणी के पॉलीमर हैं और ये ईपीडीएम के साथ अंतर परिवर्तनीय नहीं हैं । ये दोनों विभिन्न सीमाशुल्क शीर्ष के अधीन वर्गीकृत हैं । प्राधिकारी का प्रारंभिक निर्धारण के प्रयोजन से यह मानना है कि ईपीएम और

ईपीडीएम भिन्न-भिन्न श्रेणी के बहुलक हैं। चूंकि निर्यातकों, आयातकों के उत्तर और याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत सूचना में से किसी के आधार पर ईपीएम के निर्यात के कोई प्रमाण नहीं हैं, इसलिए प्रारंभिक निर्धारण के प्रयोजन से संबद्ध देश से निर्यातित ईपीएम और घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित ईपीएम के समान वस्तु होने के मामले की जांच नहीं की जा सकती है।

3. घरेलू उद्योग

याचिका घरेलू उद्योग की ओर से मै0 हरदिलिया यूनिमर्स लिमि0 (एच यू एल) द्वारा दाख की गई है। इसकी हैसियत पर कोई विवाद नहीं है क्योंकि भारत में ईपीडीएम रबड़ का कोई दूसरा उत्पादन नहीं है। इसलिए, याचिकाकर्ता मौजूदा याचिका दायर करने की पात्रता को पूरा करता है और वह उक्त नियम 2(ख) के अनुसार घरेलू उद्योग है।

4. सामान्य मूल्य एवं निर्यात कीमत

धारा 9 क(1)ग के अंतर्गत किसी वस्तु के संबंध में सामान्य मूल्य का अर्थ है :

(i) समान वस्तु के लिए व्यापार के सामान्य रूप में तुलनीय मूल्य जब वह निर्यातक देश या क्षेत्र के उपयोग के निमित्त हो जिसका निर्धारण उप धारा (6) के अंतर्गत बनाए नियमों के अनुसार किया गया हो या

(ii) जब व्यापार के सामान्य रूप में निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में समान वस्तु की कोई बिक्री न हो या जब निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में विशेष बाजार स्थिति या बिक्री की कम मात्रा के कारण ऐसी बिक्री से उचित तुलना नहीं की जा सकती हो, तब सामान्य मूल्य इनमें से कोई एक होगा ;

(क) समान वस्तु का तुलनात्मक प्रतिनिधि मूल्य जब उसका निर्यात निर्यातक देश या क्षेत्र से या किसी उपयुक्त तीसरे देश से किया जाए जिसका निर्धारण उपधारा (6) के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार किया गया हो ; या

(ख) उद्गम वाले देश में उक्त वस्तु की उत्पादन लागत ; जिसमें प्रशासनिक, बिक्री और सामान्य लागत तथा लाभ के लिए उपयुक्त राशि जोड़ी गई हो जिसका निर्धारण उपधारा (6) के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार किया गया हो ;

बशर्ते कि ऐसे मामले में जहां वस्तु का आयात उद्गम वाले देश से इतर किसी देश से किया गया हो तथा जहां वस्तु को निर्यात वाले देश से ..होकर केवल बाह्यनिर्यात

किया गया हो या ऐसी वस्तु का निर्यात वाले देश में उत्पादन नहीं किया जाता हो या निर्यात वाले देश में कोई भी तुलनात्मक कीमत नहीं हो तब सामान्य मूल्य का निर्धारण उद्गम वाले देश में इसके कीमत के संदर्भ में किया जाएगा ।

निर्यातवार सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत के निर्धारण का ब्यौरा नीचे दर्शाया गया है :

मैसर्स कुम्हो पोलीकैम कं. लि. (के. पी. सी.) कोरिया गणराज्य

सामान्य मूल्य

प्राधिकारी नोट करते हैं कि विनिर्माता और निर्यातक मै. के पी सी ने अपने द्वारा निर्यात किए गए विचाराधीन उत्पादों के विभिन्न ग्रेडों के लिए अलग-अलग सामान्य मूल्य का दावा किया है । निर्यातक ने रियायत, पैकिंग, अन्तरदेशीय भाड़ा, यात्रा, विज्ञापन, मनोरंजन, नमूना, दान, वाहन रखरखाव और ब्याज के आधार पर श्रेणी-वार समायोजनों का दावा किया है । पाटनरोधी निदेशालय के अधिकारियों के एक दल ने सामान्य मूल्य के दावों और मै के पी सी द्वारा दावा किए गए समायोजनों का सत्यापन किया । निर्यात द्वारा यात्रा, विज्ञापन, मनोरंजन, नमूना, दान, वाहन रखरखाव, ब्याज और रियायत के आधार पर समायोजनों को सिद्ध नहीं किया जा सका, इसलिए इनकी स्वीकृति नहीं दी है । इसके अलावा, इनकी घरेलू बिक्री के लिए यात्रा, विज्ञापन, मनोरंजन, नमूना, दान और वाहन रखरखाव के रूप में दावा किया गया समायोजन केवल घरेलू बिक्री पर प्रासंगिक प्रतीत नहीं होता जब तक निर्यात बिक्री पर कोई समतुल्य व्यय नहीं किया गया हो । अतः प्राधिकारी केवल पैकिंग, स्वदेशी भाड़े के कारण समायोजनों की अनुमति देते हैं, जिन्हें निर्यातक द्वारा प्रमाणित किया गया है और जांच दल द्वारा जिन्हें सत्यापित किया गया है । प्राधिकारी ने उत्पादक/निर्यातक द्वारा सीधे या मै. ईसीआईएस के जरिए निर्यात किए गए विभिन्न ग्रेडों के लिए भारित औसत सामान्य मूल्य की गणना की है । इन ग्रेडों के लिए भारित औसत सामान्य मूल्य XXX डालर/मी.टन बनता है ।

निर्यात कीमत

निर्यातक ने उनके द्वारा सीधे निर्यात किए गए ग्रेडों के लिए भारत में ग्राहकों को की गई बिक्री के औसत बिक्री मूल्य के आधार पर निर्यात कीमत का दावा किया है । निर्यातक ने मै0 ईसीआईएस के जरिए निर्यात किए गए ग्रेडों के लिए भी निर्यात कीमत दर्शायी है । निर्यातक ने छूट, पैकिंग, स्वदेशी भाड़ा, समुद्री भाड़ा, समुद्री बीमा, ब्याज, शुल्क वापसी और विनिमय दर संबंधी लाभों के कारण ग्रेड-वार समायोजनों का दावा किया है । प्राधिकारी ने विनिमय दर संबंधी लाभों के समायोजन जो कि एक लागत रहित समायोजन होता है और जिसका बिक्री के समय पता नहीं चलता है, और शुल्क वापसी, जिसे सत्यापन दल द्वारा जनवरी, 2000 में किए गए दौर के दौरान सबूत के साथ प्रमाणित नहीं किया गया था, को छोड़कर अन्य सभी समायोजनों की अनुमति दी है । प्राधिकारी ने मैसर्स ईसीआईएस द्वारा उनके जरिए निर्यातित

ग्रेडों के बारे में प्रस्तुत की गई निर्यात बिक्री मूल्य को ग्रेडों के लिए विभिन्न आयातकों द्वारा दिए गए प्रत्युत्तर से सहसंबद्ध रूप में लिया है। उत्पादक/निर्यातक द्वारा सीधे या मैसर्स ईसीआईएस के जरिए निर्यातित सभी ग्रेडों के लिए भारित औसत निर्यात मूल्य *** प्रति मी. टन अमरीकी डालर बैठता है।

5. पाटन : सामान्य मूल्य और निर्यात मूल्य की तुलना तुलना से संबंधित नियम निम्नानुसार हैं :

'डंपिंग का मार्जिन निकालते समय, निर्दिष्ट प्राधिकारी निर्यात कीमत और सामान्य मूल्य के बीच उचित तुलना करेगा। यह तुलना व्यापार के उसी स्तर पर सामान्यतः कारखाना द्वार स्तर पर की जाएगी और यथासंभव उसी समयावधि के दौरान की गई बिक्रियों के संबंध में की जाएगी। जो अंतर तुलनीयता पर प्रभाव डालते हैं, उनके लिए प्रत्येक मामले में गुण दोष के आधार पर समुचित छूट दी जाएगी ; अंतर में शामिल है बिक्री की शर्तें, कराधान, व्यापार के स्तर, मात्राएं, वास्तविक विशेषताएं तथा कोई अन्य अंतर जो कीमत तुलनीयता को प्रभावित करने के लिए प्रदर्शित किए जाते हैं।

ईपीडीएम के बारे में गणना

सामान्य मूल्य और निर्यात मूल्य के बीच उचित तुलना के उद्देश्य से प्राधिकारी ने निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना और प्राधिकारी के पास उपलब्ध अन्य प्रकाशित सूचना को ध्यान में रखते हुए विचार किया है।

प्राधिकारी ने पाटन के निर्धारण के प्रयोजनार्थ निर्यातक द्वारा सीधे ही निर्यात किए गए ग्रेडों के बारे में सौदा-दर-सौदा आधार पर विश्लेषण किया है। मैसर्स ईसीआईएस के जरिए निर्यातित ग्रेडों के लिए, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि जांच अवधि के दौरान उनमें से एक ग्रेड अर्थात् विस्टालॉन 2200 का भारित औसत बिक्री मूल्य उत्पादन की भारित औसत लागत से कम रहा है। प्राधिकारी व्यापार के सामान्य रूप में विस्टालॉन 2200 के घरेलू भारित औसत बिक्री मूल्य का संदर्भ विस्टालॉन 2200 के घरेलू बिक्री मूल्य के रूप में लिया है। उसके पश्चात्, प्राधिकारी ने प्रारंभिक निष्कर्षों के प्रयोजनार्थ भारित औसत

सामान्य मूल्य की तुलना सौदा-दर-सौदा आधार पर मैसर्स ई सी आई एस के जरिए निर्यातित वस्तुओं के निर्यात मूल्य के साथ की है।

निर्यातकों के लिए पाटन मार्जिन निम्नानुसार बैठता है :-

निर्यातक	सामान्य मूल्य	निर्यात कीमत	पाटन मार्जिन %
मैसर्स कुम्हो पोलीकैम कं० लि० (के पी सी), कोरिया गणराज्य	*****	*****	9.54
कोई अन्य निर्यातक			18.35

ईपीएम के बारे में गणना

प्राधिकारी यह पाते हैं कि ईपीएम के आयातों के बारे में डीजीसीआईएंडएस से अलग-अलग ब्यौरे उपलब्ध नहीं हुए हैं। याचिकाकर्ताओं ने यह भी संकेत दिया है कि उन्होंने जांच अवधि के दौरान सीमा शुल्क शीर्ष 4002.99 के तहत ईपीएम के निर्यातों से संबंधित किसी भी ब्यौरे का अवलोकन नहीं किया है। इसके अलावा, प्राधिकारी यह पाते हैं कि याचिकाकर्ताओं को इस बात की शंका है कि ईपीएम का ई पी एम के रूप में आयात किया जा रहा है ताकि अध्याय-39 के तहत कम सीमा शुल्क का फायदा उठा सकें। प्राधिकारी ने मैसर्स के पी सी कोरिया गणराज्य के प्रत्युत्तर को देखते हुए यह पाया है कि जांच-अवधि के दौरान ईपीएम का कोई निर्यात नहीं किया गया है। जांच अवधि के दौरान मैसर्स ईसीआईएस, हांगकांग द्वारा भी ईपीएम का कोई निर्यात नहीं किया गया है। इन आंकड़ों को पुनः विभिन्न आयातकों से प्राप्त प्रत्युत्तर के साथ सह-संबद्ध किया गया है। प्राधिकारी ने पूर्वोक्त पैरा 2 के पहले ही यह संकेत दिया है कि ईपीएम और ईपीडीएम के लिए के अन्त्य उपयोग भिन्न-भिन्न हैं और ये दोनों उत्पाद भिन्न-भिन्न सीमा शुल्क शीर्षों के तहत वर्गीकृत पोलिमरों की भिन्न श्रेणी में आते हैं। निर्यातकों आयातकों के प्रत्युत्तर से किसी भी आयात का साक्ष्य न मिलने और याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत सूचना को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी ने यह माना है कि कोरिया गणराज्य से हुआ ईपीएम का आयात प्रारंभिक निर्धारण के प्रयोजनार्थ न्यूनतम है।

6. क्षति एवं कारणात्मक संबंध

ऊपर नियम 11 अनुबंध- II के अंतर्गत जब क्षति का निष्कर्ष निकाला जाता है तो ऐसे निष्कर्ष में घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति का निर्धारण भी शामिल होगा ऐसा करते समय सभी संगत तथ्यों को ध्यान में रखा जाएगा जिनमें शामिल हैं - ".....पाटित आयातों की मात्रा, घरेलू बाजार में समान वस्तुओं की कीमतों पर उनका प्रभाव तथा ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों का परिणामी प्रभाव" कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव पर विचार करते समय इस बात की जांच करना आवश्यक समझा गया है कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों से कीमतों में पर्याप्त कटौती हुई है क्या ऐसे आयातों का प्रभाव पर्याप्त मात्रा में कीमतों को अन्यथा कम करना या कीमतों में होने वाली वृद्धि को रोकना है जो अन्यथा काफी बढ़ गई होती ।

भारत में घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के पड़ने वाले प्रभाव की जांच करने के लिए हमने ऊपर नियमों के अनुबंध II (iv) के अनुसार ऐसे सूचकों पर विचार कर सकता है, जिनका उद्योग की स्थिति पर प्रभाव पड़ता है, जैसे उत्पादन, क्षमताउपयोग, बिक्री की मात्रा, स्टॉक, लाभप्रदता, कुल बिक्री आय, पाटन की मात्रा तथा मार्जिन आदि।

प्राधिकारी यह अभिमत व्यक्त करते हैं कि

(क) ईपीडीएम रबड़ के आयातों में पूर्ण रूप से वृद्धि हुई है और कुल आयातों की तुलना में ये आयात वर्ष 1996-97 में 110 मी० टन से बढ़कर वर्ष 1998-99 में 204.9 मी० टन तक और जांच अवधि के दौरान बढ़कर 287 मी० टन हो गए हैं ।

(ख) कुल आयातों में कोरिया गणराज्य का बाजार हिस्सा वर्ष 1996-97 में 4.5 % के बाजार हिस्से से बढ़कर जांच अवधि में 12.5 % हो गया ।

(ग) याचिकाकर्ता के पास ईपीडीएम का स्टॉक 31.3.98 को विद्यमान 548.30 लाख रु० से बढ़कर 30.6.99 को 741.09 लाख रु० का हो गया ।

(घ) कोरिया गणराज्य से हुए आयातों से घरेलू उद्योग उस कीमत पर बिक्री करने के लिए बाध्य हुआ है, जिससे हानि रहित बिक्री की कीमत से कम बिक्री प्राप्ति हुई है ।

क्षति के संबंध में निष्कर्ष

प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि

- (क) कोरिया गणराज्य से हुए ई पी डी एम रबड के आयातों में समग्र रूप में वृद्धि हुई है ।
- (ख) कुल आयातों में संबंध देश के बाजार हिस्से में 96-97 में 4.5 प्रतिशत और 97-98 में 4 प्रतिशत की तुलना में जांच अवधि में 12.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई है ।
- (ग) संबद्ध देश से हुए निर्यात ने घरेलू उद्योग को हानि रहित कीमत को प्राप्त करने से रोका है जिसके वित्तीय घाटा हुआ है ।
- (घ) ये आर्थिक संकेतक सामूहिक और संचयी रूप से यह प्रमाणित करते हैं कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है ।

7) भारतीय उद्योग का हित तथा अन्य मुद्दे

प्राधिकारी का मानना है कि आमतौर पर पाटनरोधी शुल्क लगाने का प्रयोजन पाटन को समाप्त करने से है जो घरेलू उद्योग की क्षति का कारण है और भारतीय बाजार में खुली उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति की पुनर्स्थापना करना है जोकि देश के आमहित में है ।

यह माना जाता है कि पाटनरोधी शुल्क लगाने से संबंधित माल का उपयोग करते हुए विनिर्मित उत्पादों के मूल्य-स्तर प्रभावित हो सकते हैं और इसके परिणाम स्वरूप इन उत्पादों की सापेक्ष प्रतिस्पर्धात्मकता पर इसका कुछ प्रभाव पड़ सकता है । परन्तु, भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा पाटनरोधी उपायों से कम नहीं होगी, खासकर यदि पाटन रोधी शुल्क की लेवी को घरेलू उद्योग की क्षति पूर्ति के लिए एक आवश्यक धनराशि तक सीमित कर दिया जाय । इसके विपरीत पाटन रोधी उपायों को लागू करने से पाटन की प्रक्रियाओं से उठाए जाने वाले अनुचित फायदे

समाप्त हो जाएंगे इससे घरेलू उद्योग की गिरावट रूकेगी और ई पी डी एम के उपभोक्ताओं की व्यापक पसंद की उपलब्धता को बनाए रखने में मदद मिलेगी। पाटनरोधी उपायों को लागू करने से संबद्ध देश से होने वाले आयात किसी भी तरह सीमित नहीं होगा और इसलिए उपभोक्ताओं को उत्पाद की उपलब्धता पर प्रभाव नहीं पड़ेगा।

घरेलू उद्योग की क्षति को खत्म करने के लिए आवश्यक पाटनरोधी शुल्क की सीमा निश्चित करने के लिए प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग हेतु उत्पादन इष्टतम लागत पर विचार करते हुए घरेलू उद्योग के लिए भारत में ई पी डी एम की हानि रहित बिक्री कीमत पर विश्वास किया है।

8. पहुंच मूल्य

ई पी डी एम के विभिन्न ग्रेडों के बारे में कोरिया गणराज्य से तथा मै. ईसीआईएस के जरिए हांगकांग से विचाराधीन उत्पाद से भारत औसत निर्यात के मूल्य के आधार पर सहयोगी निर्यातक के लिए पहुंच मूल्य का निर्धारण किया गया है। यह निर्धारण अंतिम जांच होने तक प्रारंभिक निर्धारण के प्रयोजन के लिए लागू सीमा शुल्क के भारत औसत स्तर अर्थात् 1 प्रतिशत उत्तराई प्रभार और 2 प्रतिशत हैंडलिंग प्रभार को जोड़ने के बाद किया गया है।

9. असहयोगी निर्यातकों का निर्धारण

प्राधिकारी ने प्रारंभिक निर्धारण के प्रयोजन के लिए निर्यातक द्वारा सीधे और मै. ईपीआईएस के जरिए भारत को ईपीडीएम के विभिन्न ग्रेडों के किए गए निर्यात के बारे में उसके द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना का संदर्भ लिया है। असहयोगी निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य निर्यात कीमत और पहुंच मूल्य का संदर्भ पाटन के उच्चतम मार्जिन को साक्ष्य स्वरूप लेते हुए सहयोगी निर्यातकों द्वारा निर्यातित ग्रेडों में किसी एक ग्रेड के आधार पर लिया गया है। सहयोगी निर्यातक द्वारा दावा किए गए इस ग्रेड के सामान्य मूल्य पर असहयोगी निर्यातकों को किसी समायोजन की अनुमति नहीं दी गयी है

(घ) निष्कर्ष

पूर्वोक्त पर विचार करने के बाद यह पाया गया है कि:

(क) कोरिया गणराज्य के मूल के या वहां से निर्यातित ईपीडीएम का सामान्य मूल्य से कम मूल्य पर भारत को निर्यात किया गया है जिसके कारण पाटन हुआ है।

(ख) भारतीय उद्योग को वास्तविक क्षति है।

(ग) यह क्षति, संबद्ध देश से हुए आयातों के कारण हुई है।

संबद्ध देश के मूल के या वहां से निर्यातित ईपीडीएम के सभी आयातों पर अंतिम निर्धारण होने तक अनंतिम पाटन रोधी शुल्क लगाना आवश्यक समझा गया है।

पाटन मार्जिन के बराबर अथवा उससे कम पाटनरोधी शुल्क की राशि की सिफारिश करने पर विचार किया है, जिसे यदि लगाया जाता है तो उससे घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त हो जाएगी। इस प्रयोजनार्थ आयातों की औसत पहुंच कीमत की तुलना निर्यातक वार जांच अवधि के लिए निर्धारित याचिकाकर्ता की क्षति रहित बिक्री कीमत के साथ की गई थी। जहां पाटन मार्जिन से कम था वहां पाटन मार्जिन से कम शुल्क लगाने की सिफारिश की जाती है। तदनुसार, यह प्रस्ताव किया जाता है कि अंतिम निर्धारण होने तक सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 40 के उप शीर्ष स0 4002.70.09 के तहत आने वाले कोरिया गणराज्य मूल के अथवा वहां से निर्यातित सभी ईपीडीएम पर केन्द्र सरकार द्वारा इस संबंध में जारी की जाने वाली अधिसूचना की तिथि से

अनन्तिम पाटनरोधी शुल्क जगाया जाए ईपीएम के अलावा यदि सभी भौतिक स्वरूपों में ईपीडीएम का किसी अन्य सीमाशुल्क शीर्ष अर्थात् 4002.99, 39.01 और 39.02 के अंतर्गत आयात किया जाता है तो उस पर भी निम्नानुसार पाटनरोधी शुल्क लगाया जाएगा। मै0 ईसीआईएस, हांगकांग द्वारा मै. केपीसी कोरिया गणराज्य द्वारा विनिर्मित ईपीडीएम के निर्यातों पर भी निम्नानुसार पाटनरोधी शुल्क लगाया जाता है।

1	2	3
क्रम संख्या	निर्यातक/उत्पादक का नाम	राशि शुल्क (यू एस डालर/मी. टन)
1	मैथिली कुम्हो पोलिकैम कं. लि० (के पी सी) कोरिया	124
	गणराज्य	
	कोई अन्य निर्यातक	124

(ड.) आगे की प्रक्रिया

आरंभिक निष्कर्षों को अधिसूचित करने के बाद निम्नलिखित प्रक्रिया का पालन किया जाएगा:

(क) प्राधिकारी सभी हितबद्ध पार्टियों से इन निष्कर्षों पर टिप्पणियां आमंत्रित करेगा और अंतिम निष्कर्षों में उन पर विचार किया जाएगा:

(ख) निर्यातक, आयातक, याचिकाकर्ता और संबंधित समझे जाने वाले अन्य हितबद्ध पक्ष, जिन्हें प्राधिकारी द्वारा अलग से लिखा जा रहा है, पत्र के प्रेषण की तारीख से 40 दिनों के भीतर अपने विचार से अवगत करा सकते हैं। कोई अन्य हितबद्ध पार्टी भी इन निष्कर्षों के प्रकाशन की तारीख से 40 दिनों के भीतर अपने विचार बता सकती है;

(ग) प्राधिकारी आवश्यक समझी जानी वाली सीमा तक सत्यापन करेगा। इस स्तर पर कोई नया साक्ष्य स्वीकार नहीं किया जाएगा;

(घ) प्राधिकारी सभी हितबद्ध पार्टियों को मौखिक अनुरोध हेतु अवसर प्रदान करेगा जिसके लिए तारीख और समय की सूचना सभी ज्ञात हितबद्ध पार्टियों को अलग से दी जाएगी;

(ड.) प्राधिकारी अंतिम निष्कर्षों की घोषणा करने से पहले आवश्यक तथ्यों को उजागर करेगा।

रति विनय झा, निर्दिष्ट प्राधिकारी एवं अपर सचिव

MINISTRY OF COMMERCE
(Directorate General of Anti-Dumping & Allied Duties)

NOTIFICATION

New Delhi, the 23rd March, 2000

PRELIMINARY FINDINGS

Subject : Anti-dumping investigation concerning imports of Ethylene Propylene Rubber (EPM) and Ethylene Propylene Diene Rubber (EPDM) from Korea RP

No. 28/1/99-DGAD.— Having regard to the Customs Tariff Act 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, thereof:

A. PROCEDURE

1. The procedure described below has been followed with regard to the investigation:
 - i) The Designated Authority (hereinafter also referred to as Authority), under the above Rules, received a written application from the Petitioner, M/s Herdillia Unimers Limited (HUL), having registered office at 2/2, TTC Industrial Area, D-Block, MIDC, Thane- Belapur Road, Turbhe, Navi Mumbai on behalf of domestic industry, alleging dumping of Ethylene Propylene Rubber (EPM) and Ethylene Propylene Diene Rubber (EPDM) (hereinafter also referred to as subject goods) originating in or exported from Korea RP (hereinafter referred to as subject country).
 - ii) Preliminary scrutiny of the application filed by petitioner revealed certain deficiencies, which were subsequently rectified by the petitioner. The petition was, therefore, considered as properly documented.
 - iii) The Authority, on the basis of sufficient evidence submitted by the petitioner decided to initiate the investigation against imports of subject goods from Korea RP. The authority notified the Embassy of Korea RP in New Delhi about the receipt of dumping allegation before proceeding to initiate the investigation in accordance with sub-Rule 5(5) of the Rule.

- iv) The Authority issued a public notice dated 27.8.99 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating anti-dumping investigations concerning imports of the subject goods classified under custom Code 4002.70 and 4002.99 of Schedule I of the Customs Tariff Act, 1975 originating in or exported from Korea RP.
- v) The Authority forwarded a copy of the public notice to all the known exporters (whose details were made available by petitioner) and industry associations and gave them an opportunity to make their views known in writing in accordance with the Rule 6(2):
- vi) The Authority forwarded a copy of the public notice to all the known importers (whose details were made available by petitioner) of subject goods in India and advised them to make their views known in writing within forty days from the date of issue of the letter.
- vii) Request was made to the Central Board of Excise and Customs (CBEC) to arrange details of imports of subject goods made in India during the past three years, including the period of investigation.
- viii) The Authority provided a copy of the petition to the known exporters and the Embassy of the subject country in accordance with Rules 6(3) supra. A copy of the petition was also provided to other interested parties, wherever requested.
- ix) The Authority sent a questionnaire to elicit relevant information to the following known exporters/producers, in accordance with the Rule 6(4):
 - 1. M/s Kumho Polychem Co. Limited, Korea RP
 - 2. M/s Kumho Petrochemicals Company Ltd., Korea RP
 - 3. M/s Hyundai Petrochemicals Co., Korea RP
 - 4. M/s Korea Kumho Petrochemical Co. Ltd., Korea RP
 - 5. M/s Exxon Chemical International Ltd., Hong Kong

A number of parties requested for extension of time for filing information, which was allowed on due cause shown by the Authority upto 20.10.99.

- x) The Embassy of the subject country in New Delhi was informed about the initiation of the investigation in accordance with Rule 6(2) with a request to advise the exporters/producers from their country to respond to the questionnaire within the prescribed time. A copy of the letter, petition and questionnaire sent to the

exporters was also sent to the Embassy of the subject country alongwith a list of known exporters/producers.

xi) A questionnaire was sent to the following known importers/user associations of the subject goods for necessary information in accordance with Rule 6(4):

1. M/s Rishiroop Holding Private Ltd., Mumbai
2. M/s Anand Nishikawa Co. Ltd. Noida (UP)
3. M/s ASP Sealing Products Ltd., New Delhi
4. M/s BTR Wadco Automotive Ltd., Ghaziabad
5. M/s Gold Seal Engg. Products, Ltd., Mumbai
6. M/s Birla Tyres, Calcutta
7. M/s National Engg. Inds. Ltd., Calcutta
8. M/s All India Rubber Industrial Association (AIRIA)
9. Automotive Component Manufacturers Association of India (ACMA)
10. Automotive Tyre Manufacturers Association (ATMA)

A number of parties requested for extension of time for filing information, which was allowed on due cause shown by the Authority upto 20.10.99.

Response to the questionnaire/notification was filed by the following exporters/producers:

1. M/s Kumho Polychem Co. Ltd. (KPC)
2. M/s Exxon Chemical International Services Ltd., Hongkong (ECIS), through Associated Law Advisors

Response to the questionnaire/notification was filed by the following Importers/user Associations:

1. M/s J. K. Industries Ltd.
2. M/s Automotive Tyre Manufacturers Association (ATMA)
3. M/s Vikrant Tyres Ltd.
4. M/s Ceat Ltd.
5. M/s MRF Ltd.
6. M/s ASP Sealing Private Ltd.
7. All India Rubber Industries Association
8. M/s Rishiroop Holding Private Ltd., Mumbai

- xii) Additional information regarding injury and product under consideration was sought from the petitioner, which was also furnished. The information on injury and cost of production was provided by the petitioner.
- xiii) The Authority conducted on the spot investigation at the premises of the petitioner to the extent considered necessary.
- xiv) The Authority kept available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file maintained by the Authority and kept open for inspection by the interested parties;
- xv) Cost investigation was also conducted to work out optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) and the information furnished by the petitioner.
- xvi) ****in this notification represents information furnished by an interested party on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules.
- xvii) A team of officers from the Anti-dumping Directorate visited the premises of M/s KPC in January, 2000 and verified the claims on normal value and export price and adjustments claimed thereof.
- xviii) Investigation was carried out for the period starting from 1.4.98 to 30.6.99 i.e. the period of investigation (POI).

B. VIEWS OF EXPORTERS, IMPORTERS AND OTHER INTERESTED PARTIES

1. PETITIONER'S VIEWS

a) PRODUCT UNDER CONSIDERATION

- i) EPM/EPDM synthetic rubber can be produced in many grades/ types/ forms. EPDM is usually produced in bale form containing 20-25 kg per bale. The technical specifications of EPM/EPDM are broadly governed by Ethylene, Propylene, Diene content and Mooney viscosity whose variation can produce different grades.
- ii) Although EPM/EPDM manufacturing require special technology, monomer (raw material), technical skills, the manufacturing process/ method for producing different grades broadly remains the same and no special equipments are required for different

grades. The marketing and distribution of production also remains the same for various grades.

- iii) EPM/EPDM produced by different suppliers are interchangeable in use.
- iv) There is no substitute available for EPM/EPDM.
- v) There is no significant difference in product produced by domestic industry and EPM/EPDM exported from Korea RP.
- vi) EPM/EPDM is produced by using solution polymerisation technology. There is no significant difference in production process employed by various producers world over, although other manufacturers fine-tunes their production processes according to available facilities and necessities.
- vii) Exporters from Korea RP are resorting to large scale dumping of EPM/EPDM in the market.

b) ON DUMPING

- i) Reliable figures of prevailing prices of EPM/EPDM in Korea RP could not be obtained and hence constructed cost of production based on the standard consumption norms for the major raw material, packing material and utilities for determining the normal value in Korea RP has been considered.
- ii) The information on prices at which subject goods have been exported from and imported into the Korean market have also been considered because the Price at which goods have been imported into Korea is the price at which goods must be sold by the producers in Korean market and would relate to import prices of such goods.
- i) EPM/EPDM is classified under dedicated custom subheading. DGCIS data can therefore be considered as reflecting true picture of the import volume and value of EPM/EPDM. As DGCIS has not released statistics for 98-99, export price, has been claimed in the current year on the basis of a secondary source viz. (PPR's) published data.

c) ON INJURY

- i) Imports from Korea RP have increased in absolute terms. The market share of imports in total demand from the subject country which was only 4.5% in 1997 rose to 9.81% in 98-99.
- ii) There has been significant decline in production and capacity utilisation. Domestic industry has not been able to utilise the full capacity in view of dumping of goods initially by Japanese now by Korean manufacturers.
- iii) Sales of domestic industry which was 3074 MT in 96-97 has remained more or less stagnant in 97-98 and 98-99 due to dumping by Japanese and Koreans.
- iv) Inventory of the petitioner has increased from 134 MT as on 1.4.98 to 206MT as on 31.12.98.
- v) The petitioners have lost sales of the major customers like M/s Vikrant Tyres, M/s Mysore Polymers and M/s Felcon Tyres.
- vi) Though there is no significant change in employment level of the petitioner's company as they have the policy to retain people, appointment of fresh persons is almost banned in all the areas.
- vii) The petitioners have not been able to achieve optimum sales volumes nor achieve fair sales realisation on account of tremendous pressure from the dumped imports.

d) ON CAUSAL LINK

- i) Exporters from the other countries are exporting EPM/EPDM in the Indian market at fair price and, therefore, not causing injury to the domestic industry.
- ii) There has not been much change in demand of EPM/EPDM in India and, therefore, these have not contributed to any injury to the domestic industry.
- iii) The domestic industry has been compelled to sell at prices significantly below its cost of production to match the landed value of imports and has been suffering heavy financial losses.

2. EXPORTER'S VIEWS

a) PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND LIKE ARTICLE

1. M/s KPC has made the following submissions:-

- i) All grades of EPM/EPDM are not substitutable and any one cannot be used in any applications.

- ii) M/s KPC have a lot of types of EPM/EPDM such as bale, friable, crumbs and pallet and the special equipments might be required for different grade/types.
- iii) M/s KPC is manufacturer, shipper and exporter for KEP brand EPM/EPDM. M/s Rishiroop is the representative agent for KEP brand for the Indian market.
- iv) M/s ECIS is the seller for vistalon brand EPM/EPDM.

2. M/s ECIS has made the following submissions:-

- i) M/s ECIS does not manufacture in Korea RP or sell products in Korea RP and thus we have no knowledge of or base for Korean domestic prices.
- ii) Constructed normal value based on the third countries to which M/s ECIS sells in the Asia Pacific region shows that M/s ECIS's Indian customers generally pay no less than its other Asian Pacific customers.
- iii) There is no dumping during the period under investigation, because generally M/s ECIS's products are not like articles to those which are produced by the petitioner.
- iv) M/s HUL's EPM/EPDM is generally not a like article to that sold by M/s ECIS and that as a consequence most of the EPM/EPDM sold by M/s ECIS should fall outside the scope of this investigation.
- v) M/s HUL produces both DCPD and ENB based EPDM whereas all the EPM/EPDM products sold in India by M/s ECIS and other Asian Pacific countries are ENB based EPDM.
- vi) DCPD based EPDM and ENB based EPDM are distinctly different in performance.
- vii) M/s ECIS sold four grades of EPM/EPDM during the period of investigation i.e. 2200 K, 2200, 2504 and 5730 vistalon range. Only vistalon 2504 and vistalon 5730 have some similarities to M/s HUL's ENB based grades. However, M/s ECIS's vistalon 2200K and 2200 grades are different to M/s HUL's products.
- viii) Although manufacturing process of M/s HUL and M/s KPC are solution based, differences in the detailed process design can significantly impact on product capabilities and cost efficiency of plant operation.
- ix) The prices of EPM/EPDM differ significantly depending upon the type and the amount of the diene content in the EPDM terpolymer.
- x) Regardless of the diene used EPDM rubber is all classified under ITC of 4002.70 and EPM under 4002.99.

- xi) Vistalon 2000 and vistalon 2200 K are essentially the same only difference being that there is a separate production line for 2200K.

b) ON DUMPING

M/s ECIS does not manufacture either EPDM or EPM in Korea RP and neither does it sells products in Korea RP. Therefore, it will not be possible for the Designated Authority to establish normal value based on actual sales on the Korean domestic market. It is impossible to establish constructed normal value in accordance with section 9A(1)(c)(i)(b) of Indian customs tariff act since ECIS does not manufacture in Korea RP. Prices at which M/s KPC sells to M/s ECIS is market driven. EPM/EPDM produced in India and sold to Indian customers should significantly be cheaper than imported product because of existing duties.

c) ON INJURY

M/s ECIS has made the following submissions:

- i) Petitioner is not suffering any injury which can be shown to have been caused by us. Rather its economic difficulties appear to be due to performance limitations of its different products and lack of sufficient economies of scale.

d) OTHER ARGUMENTS

M/s KPC has made the following submissions:-

- i) We have no idea whether or not vistalon export sales have been imported to India nor do we know on any export details such as selling price, user names, destinations etc.
- ii) We are producing and shipping vistalon upon M/s ECIS's request while M/s ECIS is performing all the activities for export of vistalon to overseas market including India.

3. IMPORTER'S VIEWS

a) ON PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND LIKE ARTICLE

- i) M/s KPC produces several types of EPM/EPDM grades under their brand name KEP and exports to India through their exclusive agents.
- ii) Article for investigation has not been identified. EPM/EPDM are broad and distinct generic terms representing two separate sets of classes of products or articles. EPM and type of synthetic rubber is produced by the polymerisation process of ethylene and propylene and is classified under custom subhead 4002.70 while EPDM is produced by polymerisation of 3 monomers and classified under 4002.99.
- iii) The investigation is bad in law since two separate classes of polymers falling under two separate heading have been clubbed in one investigation.
- iv) EPM grades and EPDM grades are neither like articles nor interchangeable.
- v) The petitioner has not brought forward any evidence to demonstrate that either all types of co-polymers of Ethylene and Propylene are interchangeable and their end-use amongst themselves nor that they are interchangeable with any or all types of co-polymers of Ethylene and Propylene and ENB products by M/s KPC.
- vi) The past wrongful interpretation in a similar investigation of anti-dumping proceedings against Japan should not be taken as the basis for this investigation.
- vii) The petitioner has filed a complaint only against the import of EPM/EPDM grades/types imported in bale forms. On the other hand, M/s KPC produces EPM/EPDM in various physical forms such as friable, pallets, crumbs and bale type and all such materials are separate and distinctly classified. In certain applications an end-user may like to import pallet form and cannot use any other type such as bale form. The Authority has erred in not appreciating the technical difficulties of various types/grades of EPM/EPDM and incorrectly initiated these investigations for all physical forms of these products.
- viii) No technical evidence has been furnished by the petitioner such as test results to demonstrate to the Authority that all of their products are equal with any or all of the products made by HUL.
- ix) In certain applications, EPDM has been substituted by butyl rubber when the prices of butyl rubber dropped significantly. The authority will, therefore, have to recognise that demand of EPDM is dynamic and that other polymers compete with EPM/EPDM for

their use in the end applications and all such polymers are substitutable with EPM/EPDM.

- x) It is requested that separate findings be made for M/s KEP and M/s Vistalon grades by the Authority.

b) ON DUMPING

- i) The petitioner has not furnished any evidence of the normal value for the sale of product in Korea.
- ii) The option of constructed Normal value or recourse to alternative data for exports to 3rd countries is to be resorted to in those proceedings for non-organised markets and for countries which are not party to WTO.
- iii) There is no evidence of price suppression or depression during the POI by M/s KPC.

c) ON INJURY

- i) The market share of M/s KPC was negligible from 1996-97 to 98-99 and below the de minimis level.
- ii) The market share of petitioners increased from 55.75% from 96-97 to 67.86% in 98-99 even though the market contracted during the POI.
- iii) The increase in inventory level from 134MT to 206MT is not alarming and high. This would translate only to 17.6 days inventory level. Further it is not possible to say whether the actual inventory is of good material or of old material and off specifications. It is requested an ageing analysis of the inventory of M/s HUL be done to find out the dead stock of the inventory level.
- iv) The petitioners have reduced their losses during the POI as compared to previous period and that the small imports of M/s KEP grades from M/s KPC did not and could not have caused any injury to them. The reasons of incurring losses are such as low demand, low utilisation of production capacity, export of their products at below cost price, poor raw materials and utility consumption norms.
- v) The petitioners are a BIFR Company. The entire net worth of the company is negative and all financial problems that beset the petitioner have taken place prior to the POI and no cause can be attributed to the meagre imports of KEP grades of EPDM for injury during POI.

- vi) The petitioners are faced with very high quantum of payment for interests in the POI due to the financial problems faced by them in the past period.

d) ON CAUSAL LINK

- i) There was a demand contraction for EPM/EPDM in India progressively from 96-97 onwards due to severe recession in the automobile industry. Overall the market shrank from 5514 MT in 96-97 to 4824.8 MT in 98-99 indicating a contraction in demand of about 12.5% from 96-97.
- ii) No causal link can be established to the injury caused to M/s HUL with the imports from M/s KPC or Korea. There are several other factors which are causing injury to the petitioner and as per annexure-II of the anti-dumping rules, it is mandatory for Authority to examine the unknown factors other than alleging dumping import which at the same time are injuring domestic industry.
- iii) The production of 10,000/- tonnes EPM/EPDM is not a viable production capacity for this type of synthetic rubber. As a result of this their product cost is high and they are suffering injury. There is no demand growth in India during the last three years and rather the demand has contracted due to depression in the automotive sector, lack of development of high technology, application which have caused injury to the petitioner.

e) OTHER ARGUMENTS

- i) M/s KPC is neither aware of the final sales quantum nor of the final selling price of vistalon brand sold by them to M/s ECIS, Hong Kong to the Indian market. Vistalon grades of EPM/EPDM should not be considered as the export quantum from Korea and that this quantum be considered as the export quantum either from USA or Hong Kong as deemed fit, since vistalon is not the product of M/s KPC.
- ii) The Authority is requested to publish a white paper and to discuss the general principles adopted by it in arriving at the fair selling price in this investigation.
- iii) No exports have been made by Korean Kumho Petrochemicals Co. Ltd. and M/s Kumho & Co. KPC has always directly exported its product to India and to its customers. Further no material has

been sold either to M/s Vikrant Tyres or to M/s Mysore Polymers as alleged by petitioners.

- iv) M/s KPC has only sold their KEP grades during the POI to two customers in India against DEEC licences.
- v) There has been no decrease of export price to India during the POI. The material was exported at a CIF price of US\$ 1667/MT during the POI. This price is higher than the price at which exports were made to India during the previous period. The data supplied by the petitioner shows that there was no decline in the import price of EPM/EPDM from Korea during the last three years and there is no evidence of price depression or under-cutting from Korea.
- vi) M/s Ceat, M/s MRF, M/s Vikrant Tyres Ltd. and M/s J K Industries have provided information on imports and purchase from the domestic industry during the POI.

C. EXAMINATION BY AUTHORITY

The foregoing submissions made by the exporters, the importers, the petitioner and other interested parties, to the extent these are relevant as per Rules and to extent these have a bearing upon the case, have been examined and considered and have been dealt with at appropriate places in these findings.

1. PRODUCT UNDER CONSIDERATION

The product under consideration in the present investigations is EPM and EPDM rubber of all forms/grades/purities. EPDM rubber is classified under custom sub-heading 4002.70 of Schedule 1 of the Customs Tariff Act, 1975. EPDM is further classified under sub-heading no. 4002.70.09 under the Harmonized International Trade classification system and is different from polybutadiene classified under ITC sub-heading no. 4002.70.01. EPM is classified under 4002.99.

It has been argued that the petitioner has filed complaint only in the bale form while M/s KPC produced EPDM/EPM of all forms. The authority in the initiation notification dated 27.8.99 has initiated investigations for EPDM and EPM classified under Custosm Head 4002.70 and 4002.99 respectively covering all forms under these Heads.

EPM is a co-polymer of ethylene and propylene monomers and is produced by solution polymerization.

EPDM is also synthetic ter-polymer of ethylene, propylene and diene is produced by solution polymerization technique. EPDM provides better ozone and thermal resistance and is mainly used in automotive applications such as profiles, radiators, hoses and seals; in building and construction as profiles, roofing foils and seals; in cable and wire as cable insulation and jacketing and in applications as a wide variety of mostly in moulded article.

EPM and EPDM have different uses being different class of polymers and are not inter changeable and therefore for the purposes of present investigation, authority considers the product under consideration as EPDM classified under ITC head 4002.70.09 and EPM classified under head 4002.99.

The manufacturing process, functions, and uses and custom classification indicated above are, however, indicative only and are in no way binding on the scope of the present investigations.

2. LIKE ARTICLE

In order to examine whether EPDM rubber produced by the domestic industry is a Like Article to the EPDM exported from Korea RP characteristics such as physical characteristics (size, chemical composition, raw material) manufacturing process and technology, functions and uses, product specifications, pricing, distribution and marketing and tariff classification of the goods have been considered.

It has been argued by other interested parties that EPM and EPDM grades are neither like articles, nor interchangeable nor substitutable. Also that physical forms of the grades are different and distinct. The authority further notes that the difference in grades and their forms of EPDM has been pointed with respect to technology and end use. It has been argued that out of the four grades exported by M/s ECIS only two grades viz. Vistalon 2504 and 5730 are similar to the M/s HUL's ENB based grades. Further

the process design of exporter's and petitioner's grades vary and also the prices of EPM/EPDM grades vary depending on the diene and terpolymer content. The authority has considered these attributes while examining the issue of like article with reference to various grades of EPDM produced by the petitioner and those imported from the subject country. The authority holds that the EPDM from Korea RP and goods produced the petitioner have characteristics closely resembling each other and are technically and commercially substitutable. EPDM produced by the domestic industry are a like article to EPDM exported from Korea RP within the meaning of the Rule 2(d).

As regards, EPM, the Authority notes that these are different class of polymers and are not interchangeable with EPDM. The two are also classified under different custom head. The Authority for the purpose of preliminary determination holds that EPM and EPDM are distinct class of polymers. Since no exports of EPM are evidenced either on the basis of response of exporters, importers and information furnished by the petitioners, the issue of like article of EPM exported from the subject country and that produced by the domestic industry cannot be examined for the purpose of preliminary determination.

3. DOMESTIC INDUSTRY

The petition has been filed by M/s Herdillia Unimers Ltd. (HUL) on behalf of domestic industry. There is no dispute on standing as there is no other producer of EPDM rubber in India. The petitioner, therefore, satisfies the standing to file the present petition and constitutes domestic industry in accordance with Rule 2(b) supra.

4. NORMAL VALUE & EXPORT PRICE

Under Section 9A(1)(c), normal value in relation to an article means:

- (i) the comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or

(ii) when there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either:-

(a) comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or

(b) the cost of production of the said article in the country of origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs, and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section(6);

Provided that in the case of import of the article from a country other than the country of origin and where the article has been merely transhipped through the country of export or such article is not produced in the country of export or there is no comparable price in the country of export, the normal value shall be determined with reference to its price in the country of origin.

The exporter-wise normal value and export price determination is illustrated below.

M/s Kumho Polychem Co. Ltd. (KPC), Korea RP

Normal Value

The Authority notes that M/s KPC, the manufacturer and exporter has claimed Normal value separately for different grades of product under consideration exported by them. The exporter has claimed grade-wise adjustments on account of discounts, packing, inland freight, travel, advertising, entertainment, sample, donation, vehicle maintenance and interest. A team of officers from the anti-dumping Directorate verified the claims on normal value and adjustments claimed by the M/s KPC. The exporter could not substantiate the adjustments on travel, advertising, entertainment, sample, donation, vehicle maintenance, interest and discounts and the same are, therefore, disallowed. Further the adjustment as travel, advertising, entertainment, sample donation, vehicle

maintenance claimed for domestic sales which are not exclusively incidental to domestic sales but would have equivalent for export sales. The authority, therefore, allows adjustments on account of packing, inland freight only which have been substantiated by the export and verified by the investigating team. The Authority has calculated the weighted average, normal value for the grades exported directly or through M/s ECIS by the producer/exporter. The weighted average normal value for these grades comes to ***\$/MT.

Export Price

The exporter has claimed export price on the basis of average selling price to customers in India for the grades directly exported by them. The exporter has also indicated the export price for the grades exported through M/s ECIS. The exporter has claimed grade-wise adjustments on account of discounts, packing, inland freight, ocean freight, ocean insurance, interest, duties refund and Exchange Rate gains. The Authority has allowed all adjustments except Exchange Rate gains which is a non-cost adjustment and is not known at the time of sale and duty refund which were not substantiated with evidence during the visit of the verification team in January, 2000. The authority has referenced the export selling price as furnished by M/s ECIS for the grades exported through them as co-related with the response given by various importers for these grades. The weighted average export price for all the grades exported directly or through M/s ECIS by the producer/exporter comes to ***\$/MT.

5. DUMPING-Comparison of Normal Value & Export Price

The rules relating to comparison provides as follows:

"While arriving at margin of dumping, the Designated Authority shall make a fair comparison between the export price and the normal value. The comparison shall be made at the same level of trade, normally at ex-works level, and in respect of sales made at as nearly possible the same time. Due allowance shall be made in each case, on its merits, for differences which affect price comparability, including differences in conditions and terms of sale, taxation, levels of trade, quantities, physical characteristics, and

any other differences which are demonstrated to affect price comparability."

Calculation for EPDM

For the purpose of fair comparison between the normal value and the export price, the Authority has considered taking into account the information furnished by the exporters, and other published information available with the Authority.

The Authority has carried out transaction to transaction analysis for the grades exported directly by the exporter, for the purpose of determination of dumping. For the grades exported through M/s ECIS, the Authority notes that one of the grades viz. vistalon 2200 has weighted average selling price lower than the weighted average cost of production during the period of investigation. The Authority has referenced the domestic weighted average selling price of vistalon 2200K as the domestic selling price of vistalon 2200 in the ordinary course of trade. The Authority has thereafter carried out weighted average normal value comparison with export prices on transaction to transaction basis for the goods exported through M/s ECIS, for the purpose of preliminary findings.

The dumping margin for exporters comes as under:

Exporter	Normal Value	Export price	Dumping margin(%)
M/s Kumho Polychem Co. Ltd. (KPC), Korea RP	*****	*****	9.54
Any other exporter	*****	*****	18.35

Calculation for EPM

The Authority notices that the separate details on imports of EPM are not available from DGCI&S. Also the petitioners have indicated that

they have not observed any details pertaining to EPM imports under Custom Head 4002.99 during the POI. Further the Authority notices that it is the apprehension of the petitioners that EPDM is being imported as EPM to avail lower custom duty under chapter 39. The Authority also notices from the response of M/s KPC, Korea RP that no exports of EPM have been made during the POI. No exports of EPM are also made by M/s ECIS, Hong Kong during the POI. The data has further been co-related with the response received from various importers. The Authority has already indicated in the foregoing para 2 that the end-uses for EPM and EPDM are different and the two products are different class of polymers classified under different custom heads. In view of no imports evidenced from response of exporters, importers and information furnished by the petitioner, the Authority holds the imports of EPM from Korea RP as *deminimus* for the purpose of the preliminary determination.

6. INJURY AND CAUSAL LINK

Under Rule 11 *supra*, Annexure-II, when a finding of injury is arrived at, such finding shall involve determination of the injury to the domestic industry, ".....taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles....". In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree.

For the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry in India, we may consider such indices having a bearing on the state of the industry as production, capacity utilisation, sales quantum, stock, profitability, net sales realisation, the magnitude and margin of dumping, etc. in accordance with Annexure II(iv) of the rules *supra*.

The authority observes that

- (a) Imports of EPDM rubber have increased in absolute terms and relative to total imports from 110 MT in 96-97 to 204.9 MT in 98-99 and to 287 MT dumping POI.
- (b) Market share of Korea RP in total imports increased from 4.5% in 96-97 to 12.5% in POI
- (c) The stocks of EPDM with the petitioner increased from Rs. 548.30 lakhs on 31.3.98 to Rs. 741.09 lakhs on 30.6.99.
- (d) The imports from Korea RP have forced the domestic industry to sell at price which led to sales realisation below the non-injurious selling price.

CONCLUSION ON INJURY:

The Authority concludes that

- (a) The imports of EPDM rubber from Korea RP increased in absolute terms.
- (b) The market share of the subject country in total imports increased in POI to 12.5% as compared to 4.5% in 96-97 and 4% in 97-98.
- (c) The exports from subject country have prevented domestic industry from realising non-injurious price thus resulting in financial losses.
- (d) These economic indicators collectively and cumulatively establish that domestic industry has suffered material injury.

7. INDIAN INDUSTRY'S INTEREST & OTHER ISSUES

It has been argued by interested parties that community interest be kept in view.

The Authority holds that the purpose of anti dumping duties, in general, is to eliminate dumping, which is causing injury to the domestic industry and to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country.

It is recognized that the imposition of anti dumping duties might affect the price levels of the products manufactured using the subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition on the Indian market will not be reduced by the anti dumping measures, particularly if the levy of the anti dumping duty is restricted to an amount necessary to redress the injury to the domestic industry. On the contrary, imposition of anti dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of EPDM. Imposition of anti dumping measures would not restrict imports from the subject country in any way, and therefore, would not affect the availability of the product to the consumers.

To ascertain the extent of Anti-dumping duty necessary to remove the injury to the domestic industry, the Authority has relied upon a non-injurious selling price of EPDM in India for the domestic industry, by considering the optimum cost of production for the domestic industry.

8. LANDED VALUE

The landed value has been determined for the cooperating exporter on the basis of the weighted average export price of the product under consideration from Korea RP and through M/s ECIS

from Hong Kong for the various grades of EPDM after adding the weighted average level of applicable custom duties, i.e. 1% towards landing charges and 2% handling charges for the purpose of preliminary determination pending final investigation.

9. ASSESSMENT OF NON-COOPERATING EXPORTERS

The Authority has referenced the information as provided by the exporter for the various grades of EPDM exported by them directly and also through M/s ECIS to India for the purpose of preliminary determination. For the non-cooperating exporters, the Normal Value, the export price and the landed value have been referenced on the basis of one of the grades exported by the cooperating exporters, evidencing highest margin of dumping. No adjustments on normal value as claimed by the cooperating exporter for this grade have been allowed to the non-cooperating exporters.

D. CONCLUSIONS:

It is seen, after considering the foregoing, that:

- a. EPDM originating in or exported from Korea RP has been exported to India below normal value, resulting in dumping;
- b. The Indian industry has suffered material injury;
- c. The injury has been caused by the imports from the subject country.

It is considered necessary to impose anti dumping duty, provisionally, pending final determination, on all imports of EPDM originating in or exported from the subject country.

It was considered to recommend the amount of anti-dumping duty equal to the margin of dumping or less which if levied would remove the injury to domestic industry. Landed value of the imports for individual exporters, for the purpose, were compared with the non-injurious selling price of the domestic industry, determined for the

period of investigation. Wherever the difference was less than the dumping margin, a duty lower than the dumping margin is recommended. Accordingly, it is proposed that provisional anti dumping duties as set out below be imposed, from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government, on all imports of EPDM originating in or exported from Korea RP falling under Chapter 40, Customs sub-heading 4002.70.09 of the Customs Tariff, pending final determination. EPDM in all physical forms excluding EPM if imported under any other custom head viz. 4002.99, 39.01 and 39.02, would also be subjected to the anti dumping duties as set out below. Exports by M/s ECIS, Hong Kong, of EPDM manufactured by M/s KPC, Korea RP is also subjected to the anti-dumping duty as set out below.

(1)	(2)	(3)
<u>Sl.No.</u>	<u>Name of the exporter/producer</u>	<u>Amount of duty(US\$/MT)</u>
1.	M/s Kumho Polychem Co. Ltd. (KPC), Korea RP	124.00
2.	Any other exporter	124.00

E. FURTHER PROCEDURE

The following procedure would be followed subsequent to notifying the preliminary findings:

- a. The Authority invites comments on these findings from all interested parties and the same would be considered in the final findings;
- b. Exporters, importers, petitioner and other interested parties known to be concerned are being addressed separately by the Authority, who may make known their views, within forty days from the date of the despatch of the letter. Any other interested party may also make known its views within forty days from the date of publication of these findings;

- c. The Authority would conduct verifications to the extent deemed necessary. No fresh evidence will be accepted at this stage;
- d. The Authority would provide opportunity to all interested parties for oral submissions, for which the date and time shall be communicated to all known interested parties separately;
- e. The Authority would disclose essential facts before announcing final findings.

RATHI VINAY JHA, Designated Authority
& Addl. Secy.

